

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

कवित्र राष्ट्र कालियास संस्कृत विश्वविद्यालय मुभालय, सम्बद्ध कवित्र कर्ड कालियास संस्कृत विश्वविद्यालय भूभालय, समरेक हरूल दिन विकास सम्बद्ध Sites Tub

॥अर्धसंग्रेन।।अमु॰ ग्रास्थ्रेनस्थिन विस्ताः उत्तमको अतिष्ताम हमिताम हानां अमुता॰ ग्रां श्रेन दिस्य देषां गां भेतार्क्षण नेत्र विस्ताम हार्या पात्रा देने नियम भाग गां भेत पितृषिताम हमिताम हार्या पात्रा देवेस हसे यानिस्थ शाहित ब्राह्मणान् पृष्णाः संयोजयहित काह्म गेरन् मातः।। येतार्क्षण त्रस्क कृत्वा ये वे वे कुत्रि पितृषिता महमिताम हपात्र त्रये वे तार्क्षण वृत्या से त्त्रां गंपात्रां तरगृहीला। अम्बर्गम्भम्यां तर्रम् तर्वा व्याप्त्रां तरग्रहीला। अम्बर्गम्भ मुक्गात्र्रम् विवाधित्र विवाधित्य व

 हाना अमुन रा॰ अ॰ भा आ॰ णावसुर द्रा दिसस्त पाणा र प्रतिष देन प्रथाभाग राः प्रेत पितृ पिता मह प्रियाम हणि दें सहसं माज कि को। सं में जिया। मधुना तां दृति तृत्रो नस् वर्ण राष्ट्र कुरान वार जुना प्रेत पिंड लिधा विश्व ज्या। त्रे माभ ग वते वास्तु देवाचे ति। अस्प उपस्प रूप्। प्रेत पिंड प्रथम राष्ट्र हवाम हस्ते गृही लायध्द भिका पित्वा। प्रेत पितृ विंड दक्षिण दस्ते गृही ला । अमुन रा॰ अ॰ भा० प्रेत प्रति विं वृत्या उत्तर तो क्या स्थि वतुभाव प्रास्थ पितृ स्त्रा

वित्वप्रास्थियप्रेतिवतायह्यः भ्राः नाः रहरूपयेत्वि उदितीयतायहेत प्रेतिवायहेते वेतायह विवेश्व हरायानिका । सं मानाः व्याप्तः भ्राः भ्राः नाः प्रेत्ति सितायह विवेश स्थानिका । ये समानाः व्याप्तः भ्राः भ्राः प्रेत्ति सितायह विवेश स्थाने व्याप्ताः विवेश स्थाने व्याप्ताः । प्रेत्ति विवाय स्थाने विवेश स्थाने व्याप्ताः । प्रेत्ति विवाय स्थाने विवेश स्थाने स्थाने स्थाने विवाय स्थाने स्याने स्थाने स्थाने

त्रवित्रवित्रवत्ताम्याक्रवेत्रव्यवाम्य विवेद्यस्य व्याचित्रव्याः स्थान्य व्याच्याः स्थान्य व्याच्याः स्थान्य व्याच्याः स्थान्य स्थान्

```
[OrderDescription]
,CREATED=02.08.19 11:06
,TRANSFERRED=2019/08/02 at 11:09:04
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0001237
,Book Name=M-26D-PINDSNYOJNAM
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE5=00000006.TIF
```